Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१६७५

१३२

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ श्री ॥

॥ श्री वीतरागायनमः ॥

मि० वीरचंद राघवजी गांधी

का

जीवन चरित्र

श्री जैन श्वेतांबर कान्फरेंस हैरल्ड में प्रकाशित
गुजराती लेख का हिन्दी अनुवाद

अनुवादक

श्याम लाल वैश्य मुरार

प्रकाशक

श्री आत्मानन्द जैन सभा अम्बाला शहर

श्रीवीर निर्वाण सं० २४४५ श्री आत्म सं० २४
विक्रम सं० १९७६ ईस्वी सन् १९१९
प्रथमावृत्ति १०००] मूल्य ।)

जैनीलाल प्रेस सहारनपुर में छपा

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

धन्यवाद

इस पुस्तक के छपाने में लाला दौलतराम जी के सुपुत्र लाला हरीचन्द इन्द्रसैन अंबाला शहर निवासी ने रु० ७०) की सहायता दी है इसलिये सभा की तर्फ से उपरोक्त महानुभावों को धन्यवाद दियाजाता है।

निवेदकः—
सेक्रेटरी

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ श्रीवीतरागायनमः ॥

❋ भूमिका ❋

मनुष्य जीवन को आदर्श बनाने के लिये, उसे कर्तव्यवान बनाने के लिये ऐसे ग्रन्थों की आवश्यकता है जिनसे हमें आगे बढ़ने के लिये मार्ग मिले। महात्माओं के कर्त्तव्यशाली पुरुषों के जीवन की घटनाऐं मनुष्य को इस योग्य बनाती हैं। महात्माओं के चरितों सेही भविष्य जीवन का संगठन होता है पूज्य पुरुषों और महात्माओं के चरितों के अनुकरण करने सेही हम आगे बढ़ सकते हैं। जीवन को कर्त्तव्यशाली, महान् और पूज्य बनाने का इस से सरल और कोई दूसरा साधन नहीं है। शिवाजी, गारफिल्ड और लिंकन आदि महात्मा भी चरितों के पढ़नेसे ही ऐसे प्रसिद्ध महात्मा हुये। बालकों के ऊपर जीवन चरित्रों का बड़ा प्रभाव पड़ता है।

हिन्दी में जीवन चरित्रों का प्रायः अभावसाही है। देशोत्थान के लिये राष्ट्र भाषा होनेवाली हिन्दी में ऐसे ग्रन्थों का बाहुल्य होनाचाहिये जिससे देशका वास्तविक उपकार हो और भविष्य संतान अपने पितामहों के आदर्श पर चले तथा उनके अपूर्ण रहे हुये कार्यों को पूर्ण करें। पुस्तक प्रकाशकों को अवश्य इस ओर ध्यान देना चाहिये।

संसार में अनेकों महापुरुष होगये हैं जिन्हों ने अपना सारा जीवन मनुष्य समाज की सेवा में ही विताया है। उन

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भर भी वे सेवा से विरत नहीं हुये। वास्तव में ऐसे मनुष्यों का जन्म संसार में स्वर्ग बनाने के लिये हुआ था। इन्हीं के परिश्रम का फल है कि उन के यत्न से आज संसार की मनुष्य जाति अनेकों प्रकार के सुख भोग रही है। ऐसे महापुरुषों की गुणगरिमा संसार में उस समय तक बनी रहेगी जिस समय तक मनुष्य जाति का नाम रहेगा।

ऐसेही महापुरुषों में मिस्टर गांधी का जन्म हुआ था। जैन जाति को इस पर अभिमान है कि वर्तमान काल में उस जाति में ऐसे कर्मवीर ने जन्म लिया। मिस्टर गांधी ने अपना सारा जीवन लोकोपकार में बिता दिया। वे मरते समय तक मनुष्य समाज की सेवा के लिये कटिबद्ध रहे। जैन धर्म और जैन जाति का तो उन्हों ने बड़ा उपकार कियाही है पर उन्हों ने सार्वजनिक कामों में भी खूब योग दिया है। वे पक्के देश भक्त थे। केवल जैनियों के उत्थान के लिये उन्होंने परिश्रम नहीं किया बल्कि अपने देश और देश भ्राताओं के लिये कुछ उठा नहीं रखा। दुष्काल में अमेरिका से अन्न का भरा हुआ जहाज़ भिजवाना [illegible] शिक्षा के प्रचार के लिये मिशन स्थापित करना, उनकी देश भक्ति के उत्कट प्रमाण हैं। अमेरिका में भारत बासियों की [illegible] रीति के बिषय में किम्बदन्तियां फैल रहीं थीं। उनको [illegible] करने का श्रेय मिस्टर गांधी कोही है। हम स्वयं कुछ [illegible] कह कर प्रातः स्मरणीय महात्मा महादेव गोविन्द रानाडे [illegible] दी हुई स्पीच को पढ़ने की प्रार्थना करते हैं। उसका सारांश जीवन चरित के अंत में दियागया है।

जैन समाज के नवयुवको, उठो, अपने इस बंधु का अनुकरण करो। देश और समाज सेवा में अपने जीवन को अर्पण

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

करके मनुष्य योनि सार्थक करो। अपने हृदय पर नीचे लिखी कविता लिखलो और गांधीके आदर्श को सामने रखकर आगे बढ़ो

" जिस को न निज गौरव तथा, निज देश का अभिमान है।
वह नर नहीं, वह पशु निरा है, और मृतक समान है ॥

सेवकः—

श्याम लाल वैश्य
सम्पादक 'नारद,
तथा
भू० पू० सम्पादक 'मुनि'

मुरार (गवालियर
होलिका पौर्णिमा

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्वर्गीय वीरचन्द गांधी।

genius begins great works;
labour alone finishes them.

महान् कार्यों का आरंभ प्रतिभाशाली पुरुष करते हैं; पर उसका अंत श्रमशील मनुष्य ही करते हैं।

॥ प्रस्तावना ॥

कर्तव्यशाली महापुरुषों का जीवन सामान्यता माननीय और अनुकरणीय होता है। इस संसार में करोड़ों मनुष्य पैदा होगये, हो रहे हैं और भविष्य में होंगे, परन्तु ज्ञान सम्पादन करके जिन्हों ने राष्ट्रोन्नति के लिये, समाजोन्नति के लिये परोपकार के लिये, और धर्म के निमित्त अपना स्वकर्त्तव्य समझ कर जिस महात्मा ने अनेक काम किये हों, कर रहे हों और भविष्य में करेंगें, वेही महात्मा वंदनीय हैं। कर्त्तव्य के सहारे मनुष्य इस भूलोक को भी स्वर्ग बना सकता है और स्वयं मानव देव बन सकता है। पूर्व पुरुषों के महत्व का कारण उनकी कर्त्तव्य परायणता ही है। उसी कर्त्तव्य परायणता के उपासक पूर्व पुरुषों की स्तुति स्रोत गाये जाते हैं। कर्तव्य एक अजब और अमूल्य शक्ति है जिसकी साधना से देश, धर्म, और समाज उन्नति के शिखर पर चढ़ सकता है। कर्त्तव्य की प्रशंसा में एक अंग्रेज कवि का कथन है कि —

I slept and dreamt that life was Beauty,
I woke and found that life was Duty.

स्वप्न दृष्टि में मानव जीवन सौन्दर्य में लिप्त दिखाई दिया,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पर जहां दृष्टि जागृत हुई—घट की खुली, तहां यही मानव जीवन कर्त्तव्य पूर्ण दिखाई दिया ।

इस का अर्थ यह है कि कर्त्तव्य के कारण मानवी चरित्र महत्व का होजाता है। हम अपने प्राचीन पुरुषों, ऋषियों और महात्माओं के विषय में विचार करते हुये कहते हैं प्राचीन समय में सत्तयुग था—वह स्वर्ण का था और उस काल में देव तुल्य महात्मा होते थे पर हमारे जमाने के लिये वे दिन गये ”। पर वास्तव में सत्य क्या है ? इसका विचार करने पर ज्ञात होता है कि काल सर्वदा वही रहता है। जो समय पहिले था, वह अब भी है। पूर्व काल जो उनका था वह हमारा भी है। केवल अन्तर इतनाही है कि इस काल में वैसे कर्त्तव्य परायण परिश्रमी पुरुष पैदा नहीं हुए, इसलिये इस काल का महत्व घटगया और वह तुच्छ मालूम होने लगा। प्रति दिन सहस्र रश्मि सूर्य तेज सहित पूर्वदिशा में उदय होता है पश्चात् दिन भर भूमि को प्रकाशित करके सायंकाल के समय पश्चिम दिशा में अस्त होजाता है। रात्रि के समय आकाश असंख्य तेज पुंज ताराओं से प्रकाशमान रहता है। चन्द्र ज्योति का रमणीय साम्राज्य शुक्ल पक्ष में स्थिर रहता है । और कृष्ण पक्ष में अंधकार अपनी सत्ता आजमाता है । ग्रीष्म में सूर्य का तेज प्रबल अर्थात् गर्म होता है और शरद ऋतु में प्रकाश ठंढा रहता है। वर्षा काल में आकाश से वृष्टि होती है और शरद ऋतु में पवन मंदता से चलती है। इस सब का कहने का सारांश यह है कि काल की जो गति होती है वह अब भी है। वर्त्तमान काल तथा पूर्व काल में यदि कुछ अन्तर होसकता है तो थोड़ा बहुत स्थितमंतर है। पूर्व काल में सोने की वर्षा

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

होती थी, अब नहीं होती, ऐसी स्थित न कभी होसकती है और न थी। प्रत्येक काल में कर्त्तव्य शाली पुरुष अवश्य थे। जिस देश में, जिस धर्म में, और जिस समाज में कर्त्तव्यवान पुरुषों का जन्म होता है, वह देश, वह धर्म, और वह समाज इस पृथवी पर स्वर्ग तुल्य संचार करता है। अरे भारतवर्ष। अरे जैन समाज। तू कर्त्तव्य परायण पुरुषों का जन्म किसी एकही काल में नहीं वरन् सदैव देता रह? प्राचीन काल की संपादित उन्नति को पुनः इस भूमंडल पर विस्तारित करदे? ओ अविनाशी काल! सैकड़ो नहीं तो नहीं किन्तु थोड़ी संख्या में ही कर्तव्य शाली नर रत्नों को हमारे समाज में उत्पन्न कर और उनके द्वारा जैन धर्म का प्रकाश भूमंडल पर डाल!

प्रिय वाचक, भूमंडल पर जैन धर्म का प्रकाश डालने वाले एक महात्मा के अमूल्य चरित्र का आज मैं आप को परिचय कराता हूं। वीरचन्द भाई का जीवन सुशिक्षित और जैनधर्मोन्नति के इच्छुक युवकों के लिये अनुकरणीय है। जैन धर्म पृथवी पर बसने वाले समस्त प्राणियों का धर्म है। जिन धर्म अपनी आत्मा का जो धर्म वह जिन धर्म है। जिन प्रणीत धर्म का पाश्चात्य देशमें प्रसार करने के लिये सुशिक्षित और उत्साही वीरचन्द ने कैसा उद्योग किया। वीरचन्द के चरित्र से इसके लिये शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये। जैन धर्म के ऊपर अन्य समाजों में दिये हुए भाषण, और कार्य करने की अपूर्व शक्ति आदि से आपकी कर्त्तव्य दक्षता सिद्ध होती। इसी लिये आपका चरित्र इतना बोध प्रद है। जो जन्म लेता है वह अवश्य मरेगा यह प्रकृति का अटल नियम है। कोई भी अमर होने का

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ा नहीं लिखा लाया। किसी न किसी दिन काल के गाल
जाना ही पडेगा। परन्तु जिसने कर्त्तव्य निष्ट होकर संसार
कठिनाइयों की परवाह न करके बडे बडे कठिन अवसरों
पार कर के मृत्यु पाई वह महापुरुष मरकर भी अमरहैं।
ा प्रशंसनीय चरित्र लोगों के हृदयों पर अंकित रहता हैं।

जिनको वास्तविक अपना मानव जीवन कृतार्थ करने के लिये निर्वाह करना है उनको यह भली प्रकार से समझ लेना चाहिये कि इस स्थूल शरीर को त्यागने सेही महान् पुरुषों की मृत्यु नहीं होती, उनका अक्षर देह कीर्ति रूप में अमर रहता है। जो इस क्षण भंगुर संसार यात्रा में अपने अमूल्य मानवी जीयन का मूल्य बिलकुल नहीं जानते। क्या उनका जीवन खूंटे अगाड़ी पिछाड़ी से बंधे हुए घोड़े के समान नहीं है? मनुष्य में और पशु में अन्तर ही क्या हैं? दोनों का आहार विहार समान हैं; दोनों आनन्द उड़ाते हैं। परन्तु जो मनुष्य अपना जीवन परमार्थ में बिताकर कर्तव्य परायण रहता है, उसी का मानवी जीवन सफल है। श्रीमंतों के पास कुबेर का खजाना हो तो क्या? जिस धन में से भोग विलास के सिवा अन्य किसी परमार्थ आदि में एक कौडी भी खर्च न हुआहो तो उसके पास धन होतो क्या और न होतो क्या? सांप के फन में रहने वाली मणि और हाथी के मस्तक में रहनेवाला मोती भी धन है! हम को हमारे पूर्व पुण्य के उदय से धन मिला है यह समझ कर जो श्रीमंत लोकोपकार के लिये अपना धन खर्च करते हैं, वही धन प्रयोजनीय है; दूसरे धन से क्या लाभ। ऐसे ही धनवान प्रशंसनीय है। कहने का सारांश यह है कि मनुष्य जीवन के हेतु कर्तव्य तत्परता व्यक्त करवाना है।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कर्त्तव्य कर्म के भक्त महात्मा श्रीयुत वीरचन्द राघव जी गांधी का अल्प किन्तु महत्वपूर्ण चरित्र रूपी आदर्श निवेदन किया जाता है।

॥ जन्म ॥

जैन धर्मीय श्वेताम्बर सम्प्रदाय में काठियावाड़ प्रदेश के भावनगर शहर के निकट वर्ती ग्राम महुवा में आपका जन्म हुआ था। तारीख २५ अगस्त सन् १८६४ को वीरचन्द गांधी ने गरीब पर उत्तम कुल में जन्म लिया। आप के पिता का नाम राघव जी भाई था। राघव जी भाई जवाहरात का काम करते थे। इस व्यवसाय में बड़े ही प्रवीण थे। साथही धर्म में भी आप की बड़ी रुचि थी। धर्मानुरक्त और धर्म कथा में आप एक दक्षपुरुष थे। जिसे आज कल शिक्षा कहते हैं उस प्रकार की उन्हों ने शिक्षा न पाई थी। पर वे अपने समय के अच्छे सुधारक थे। उस समय की निरुपयोगी, अप्रस्तुत और अज्ञान युक्त प्रचलित रिवाजों के सुधार में उन्हों ने समाज के लिये बड़ा परिश्रम किया था। मृत्यु के पीछे माथा कूटने का बुरा रिवाज गुजरात और काठियावाड़ में बाहुल्यता से और बड़े जोश से प्रचलित था। चरित नायक के पिता ने इसे बुरा समझ कर अपने ही घर से इस रिवाज को हटाकर अपूर्व धैर्य प्रदर्शित किया था। और समाज के सामने आदर्श स्थापन कर दिया था। सुधारक पिता के वीरचन्द जैसा सुधारक बेटा होना स्वभाविक ही है।

शिक्षा

बचपन में वीरचन्द गुजराती शाला में पढ़ने के लिये भेजे

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गये। वहां की शिक्षा समाप्त करके वे भावनगर के अंग्रेजी स्कूल में अंग्रेजी पढ़ने के लिये गये। वीरचन्द अपने दरजे में बड़े दक्ष और बुद्धिमान विद्यार्थी थे। आप ने केवल १६ वर्ष की ही अवस्था में सन् १८८० ईस्वी में मेट्रिकुलेशन परीक्षा पास कर ली। पश्चात राघवजी भाई ने उच्च शिक्षा दिलाने के अभिप्राय से उन्हें बम्बई के एलफिस्टन कालेज में भरती करा दिया। वहां वीरचन्द मनलगाकर पढ़ने लगे और प्रति वर्ष परीक्षा में पास होते चले गये। सन् १८८४ में बी० ए० परीक्षा में द्वितीय श्रेणी में बड़े मान से पास हुए। श्वेतांबर समाज में वीरचन्द ही पहिले पहिल बी० ए० हुए थे, इस लिए सारे समाज की ओर से आप को अभिनन्दन मिला। समाज हितैषी अगुवाओं को आप के बी० ए० होने पर बड़ा आनन्द मिला॥

आप का मंत्रित्व

सन् १८८२ में श्वेतांबर जैनियों की ओर से * जैन

---

* इस भारत वर्षीय जैन समाज के उद्देश्य ये थे :—

(१) समस्त हिन्दुस्तान में भिन्न २ भागों में बसने वाले सर्व जैन भाईयों में मित्रभाव का प्रचार करना॥

(२) समस्त भारत में भिन्न २ भागों में बसने वाले जैन भाइयों की सामाजिक, नैतिक, और मानसिक उन्नति हो। ऐसा सहोद्योग स्थापित करना और जैन समाज में शिक्षा, नीति और सद्गुणों का प्रसार (वृद्धि) करना।

(३) जैन धर्म के ट्रस्ट फंड और धर्म खातों के ऊपर देख रेख रखना।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ऐसोसियेशन आफ इंडिया नामक संस्थाकी स्थापना हुई। इसकेसेक्रेटरीका पद सम्मानपूर्वक और गौरव सहित श्रीवीरचंद को सं० १९४१ में सौंपागया। जबसे सार्वजनिक कार्य करने की शक्ति तीक्ष्ण हुई और मि० वीरचन्द की कर्त्तव्यशक्ति के कारण संस्था को यश प्राप्त हुआ (सं० १९४१ जैन मंडल में एक्यता होने का विवरण तथा सुधार और सं० १९४२ में हुकुम मुनि और तत्सम्बन्धी विचार,

+शत्रुञ्जय तीर्थ संबन्धी खुशकारक वृत्तांत तथा जैन भाइयों में होने योग्य सांसारिक धार्मिक और राजकीय सुधार आदि विषयों पर जो भाषण चरितनायक ने दिये हैं वे ऐसोसियेशन से प्रकाशित होनेवाले भाषण संग्रह में हैं।

---

(४) जानवरों की हत्या न होने देना ऐसा उपाय करना तथा जीव दया का पोषण करना और करवाना।

(५) भिन्न २ स्थानों तथा तीर्थों की यात्रा करने वाले यात्रियों को सुगमता पड़े, कोई अड़चन न हो, ऐसा उपाय करना साथही जैन भाई संसारिक धार्मिक और राजकीय सुधारों में अगुआ हो ऐसा उपाय करना।

+शत्रुञ्जय पर्वत के पास सूरजकुन्ड के नजदीक श्रीऋषभदेव भगवान की पादुका स्थापित थीं। ता० ७ जून १८८५ को मालूम हुवा कि कोई उसे खोद गया। ता० १९ जून को वह खोगई। वहां के ब्राह्मणों के गुरू दत्तात्रय थे। उन्हों ने यह फरयाद की (कि कोई कहता है कराई गई) कि श्रावकोंनेही पादुका खो दी हैं और गुम कीहै। इस पर श्रावकों के रखेहुये नौकरों को मारपीट के साथ पकड़ लिया। इस सम्बन्ध में

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रा० वीरचन्द पृथक पृथक उपयोगी और समाज हित कारक कार्य संस्था से पास कराने की योजना करते गये और इस लिये इस संस्था का हिन्दुस्तान में प्रभाव बढ़तागया। पहला कार्य्य जैन समाज और पालीताणा के ठाकुर सूरजसिंह के बीच पैदा होने वाले बंधान के विषय में था।

यह सब को विदित है कि शत्रुञ्जय पर्वत अकबर बादशाह और नगर सेठ शान्तिदास के समय से ही श्वेताम्बर जैनों के अधिकारमें था उसी बादशाह तथा उसके पीछे गद्दीपर बैठने वाले जहांगीर शाहनशाह आदि बादशाहों के समय में ताम्र पट्ट पर खुदे हुये फरमान का उपयोग न होन के कारण उसकी हुकूमत

गवर्नर के पास दो बार तार दिये गये। ता० १८ जुलाई को पूना में गवर्नर लार्डरे ने जैन डेप्यूटेशन से मुलाकात की। पीछे सोनागढ़ के असिस्टेन्ट पोलिटिकल एजन्ट कप्तान फोरडायस ने एक तर्फी (एक पक्षी) खोज की। पश्चात् सरकार की ओर से यह निश्चय हुआ कि पालीताणा दरबार ने जैन नौकरों के ऊपर जो अत्याचार किया है उसका निर्णय करने के लिये सोनागढ़ में खोज की है और पालीताणा कोर्ट में जैन नौकरों के सम्बन्धी केस को असिस्टेन्ट पो० ओ० नीकी कोर्ट में ले जाओ। इस पर पालीताणा दरबार महाबलेश्वर के गवर्नर पर अर्ज करने गया। और वीरचन्द और दूसरे जैन अगुआ भी गवर्नर के पास गये। इधर कार्तिक बदी ३ सं० १९४२ में ठाकुर सूरजसिंह की मृत्यु होगई। यों यह मामला बन्द होगया पश्चात गद्दी पर ठाकुर मानसिंह बैठे। इस के पश्चात् उन से शर्तनामा ही होगया। (अनुवादक)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पालीताणा राज्य कर्ता के पास चली गई । इस समय वहां जाने वाले श्वेताम्बर यात्रियों पर कर लगाने के सम्बन्ध में निश्चय हुआ । यह कर बड़ा त्रास दायक था । पर्वत की रक्षा के बहाने यह कर बसूल कियाजाता था पर्वत का संरक्षण करने को प्रत्येक यात्री पर दो रुपया कर वसूल किया जाने लगा इस से बड़ी गड़बड़ फैली । इसके लिये मि० वीरचन्द उपाय खोजने लगे ।

रक्षण करने का समाधान

इस समय काठियावाड़ के पोलिटीकल एजन्ट (जो वर्तमान समय में एजन्ट टू दी गवर्नर कहे जाते हैं) कर्नल वाटसन थे और बम्बई के गवर्नर प्रसिद्ध लार्ड रे थे । कर्नल वाटसन ने श्रावकों के प्रतिनिधियों को पालीताणा बुलावाया, इस समय प्रतिनिधियों की ओर से मि० वीरचन्द ने सारी हकीकत निवेदन की । महान प्रयास से ठाकुर साहब मानसिंह और जैन समुदाय की बीच यह शर्तनामा करार पाया कि (१) दो रुपये का कर उठा दिया जायगा, उसके बदले में जैनी लोग ठाकुरसाहेब को पंद्रह हजार रुपया देवेंगे । (२) यह शर्तनामा सन् १८८६ के अप्रैल मास से चालीस वर्ष तक रहेगा । (३) इन चालीस वर्ष के बाद रकम में फेर फार करने का दोनों को अधिकार है दोनों स्वतंत्र हैं । दोनों ओर की दलीलों को ध्यान में लाने के पश्चात् फेर फार को मंजूर अथवा ना मंजूर करने का अधिकार ब्रिटिश सरकार अपने हाथ में रखेगी । इस प्रकार वीरचन्द ने अपनी प्रभावशाली कर्तृत्व शक्ति से सब जैनियों को अंजित कर सर्वत्र आनन्द फैला दिया ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लार्ड रे को मान पत्र

गवर्नर साहब काठियावाड़ गये थे। उस समय शत्रुञ्जय तीर्थ की भेंट करते समय उनको १५ वीं दिसम्बर १८८६ई० को तीर्थ स्थान पर मान पत्र समर्पित किया गया।

व्यवसाय

इसके पीछे कोई स्थायी व्यवसाय करने की ओर श्री वीरचन्द का ध्यान गया। सोलिसिटरी नामक उच्च परिक्षा पास करने की ओर उनका लक्ष्य गया। सोलिसिटरी का पेशा बड़ाही श्रम दायक होता है। साथही उसमें समयभी नहीं मिलता। दिन रात श्रम करते रहने और फुरसत न पाने के लिये यह पेशा ऐसा बुरा है कि वर्णन नहीं होसक्ता परन्तु इसके साथही यह बड़ी इज्जत और अधिक रु० पैदा करने का व्यवसाय है, जिसके कारण इसके उपरोक्त दो कष्ट नहीं खटकते। इस कथन से यह न समझ लेना चाहिये कि उच्च, नीतिवान और धर्मिष्ट पुरुषों को इस व्यवसाय में ही नहीं पड़ना चाहिये क्योंकि बहुत से इस व्यवसाय को करते हुए भी सार्वजनिक सेवा करने को सब से अधिक समय लगाते हैं। सरकारी सोलिसिटर बनने की इच्छा से श्री वीरचन्द "लिटिल रौंड कम्पनी" में सन् १८८६ में आर्टिकिल्ड क्लार्क होगये। औ वहां वे सोलिसिटरी परीक्षा के लिये आवश्यक ज्ञान सम्पादन करने लगे। अहमदावाद और बम्बई के जैनी अभी इन्हे भूले न थे। जैन समाज के लिये अभीतक जो जो उत्तम कार्य उन्हों ने किये थे वे सब वहां के जैनियों के हृदयों पर अंकित थे। अतएव

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उन्होंने मि० वीरचन्द को इस समय द्रव्य से सहायता देकर बड़ा अच्छा किया था। इस व्यवसाय में फस जाने के कारण श्रीवीरचन्द ने जैन समाज के हित और आवश्यक कार्यों के प्रति दुर्लक्ष नहीं दिया। ऐसी समय जैन समाज को दुःख पहुंचाने वाली, हृदय द्रावक घटना घटी, उसके दूर करने के लिये जैनियों की उंगली कर्तव्य निष्ठ वीरचन्द गांधी कीही ओर उठी।

शिखर जी पर अत्याचार

यह घटना थी शिखर जी पर अत्याचार। सन् १८९१ ई० में मि० बेडम नामी अंग्रेज ने जैनियों के पवित्र क्षेत्र सम्मेद शिखर पर जिसे अंग्रेज पारसनाथ हिल कहते हैं, चरबी बनानेका कारखाना और पशु हत्यागृह खोलना चाहा था। इस सूचना से सारा जैन समाज प्रक्षुब्ध हो गया और अंगरेजी कारखाने के विरुद्ध कलकत्ता में नीचे की कोर्ट में फर्याद पेश की। वहां से जैनियों के विरुद्ध फैसला मिला इसपर उसकी अपील हाईकोर्ट में कीगई। इसी के लिए मि० गांधी की आवश्यकता पड़ी और वे कलकत्ते में आए। वहांपर रह कर उन्हों ने बंगाली भाषा को सीखा और फिर देशी भाषा में जो जो कागज मुकद्दमे के लिये उपयोगी थे उन सब का अंग्रेजी में अनुवाद करके सबूत के लिये हाई कोर्ट में पेश किये। इसी प्रकार कितने ही शिला लेख, ताम्र पत्र, और प्राचीन लेखों की सहायता से कोर्ट में शिखर जी पर्वत पर जैनियों का अधिकार प्रमाणित कर दिया। दीर्घ उद्योग तथा उत्साह के साथ हाईकोर्ट

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

में ऐसी सुन्दरता और स्पष्टता से पैरवी की गई कि नीचे की अदालत का फैसला रद होकर जैनियों के पक्ष में फैसला मिला इस प्रकार पवित्र तीर्थ क्षेत्र की इस अत्याचार से रक्षा हुई। इस बार भी मि० गांधी के हाथ में लिएहुये कार्य की विजय हुई। यह मि० वीरचन्द की दूसरी विजय थी इस समय से वीरचन्द सब की दृष्टि में आदर से देखे जाने लगे। और सब ने इन के प्रति कृतज्ञता प्रगट की।

चिकागो विश्व धर्म्म परिषद्

इसी समय अमेरिका के चिकागो नामक शहर में पाश्चात्य विद्वानों ने संसार भर के सब धर्मों की महासभा बैठाने का उद्योग किया था। प्रत्येक धर्म के प्रतिनिधियों को आमंत्रण दिया गया था। हिन्दुस्तान से भी प्रत्येक धर्म के अलग अलग प्रतिनिधि गये थे। जैन धर्म का भी एक प्रतिनिधि भेजने के लिये श्वेताम्बर जैनाचार्य श्री विजयानन्दजी सूरि (आत्माराम जी) के पास निमन्त्रण आया था जैन शास्त्रों के अनुसार साधुओं को सामान्यता समुद्र यात्रा का निषेध है। अतएव आचार्य जी ने प्रतिनिधि भेजने का प्रश्न जैन ऐसोसियेशन पर डाल दिया। ऐसोसियेशन ने जब इस प्रश्न पर विचार किया तो प्रतिनिधि होने के लिये 'वीरचन्द' ही उपयुक्त समझे गये और वे ही प्रतिनिधि निर्वाचित किये गये। जैन धर्म के तत्वमय स्वरूप को समझना कठिन हैं फिर भी उनके लिये और भी कठिन था। अतएव मि० वीरचन्द जैन धर्म और जैन तत्व का ज्ञान संपादन करने के लिये श्री मद विजयानन्द सूरि (स्वामी आत्माराम जी) के पास गये और उन से पढ़ने लगे

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पश्चात् जलयात्रा द्वारा वे अमेरिका को गये। जाते समय बम्बई बन्दर पर "यशस्वी हों" इस ध्वनि और आशीर्वाद की वृष्टि होने लगी। हिन्दुधर्म मंडल की ओर से स्वामी विवेकानन्द आदि भी इस विश्व धर्म परिषद में सम्मिलित थे। मि० गांधी जैसे तरुण पुरुष ने ऐसे महत्व के कार्य को उत्साह के साथ स्वीकार किया, इस से मि० गांधी की असामान्य विद्वत्ता और बुद्धिमत्ता भलीप्रकार से सूचित होती है। कारण, यह परिषद् धर्म विषयक ही नहीं था। किन्तु उस गूढ़ समय में श्रेष्ठ और अच्छे धार्मिक तत्व जानने की इच्छा से बड़े २ विद्वान अधिक संख्या में एकत्रित हुए थे। इस जग विख्यात और अपूर्व प्रसंग पर जैन धर्म की प्रतेष्ठता प्रकाशित करने में एक जैन युवक का मनोबल किस प्रकार से काम करगया, यह जैनियों के वर्त्तमान इतिहास में चिरस्मर्णीय रहेगी।

अमेरिका में किये हुये कार्य

सितम्बर सन् १८८३ से अमेरिका के चिकागो शहर में इस प्रचण्ड सार्व धर्म परिषद् का प्रारम्भ हुवा। और सत्तर दिनतक रही। इसमें पृथक पृथक देश के पृथक् २ धर्म प्रतिनिधियों ने अपने अपने धर्म का स्वरूप प्रकाशित किया। मि० वीरचन्द ने जैन धर्म का स्वरूप नीति और तत्वज्ञान मय ऐसी उत्तमता से प्रकाशित किया कि सबका ध्यान आकृष्ट होगया हम अपनी ओर से कुछभी न कह कर नीचे एक प्रसिद्ध अमेरिकन समाचार पत्रकी सम्मति देते हैं।

"A number of distinguished Hindu schalars, philosophers, and Religous teachers attended and addressed the Parliament, some of them taking rank wich the highest

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

of any race for learning eloquence and piety. But it is safe to say that no one of the pricental scholars was listened to with greater intrest than was the young lay man of the Jain community as he declared the Ethics and Philosophy of his people."

इसका हिन्दी अनुवाद यह हुवा कि:—

"पारलियामेंट (परिषद्) में प्रतिष्ठित हिन्दू विद्वान तत्व ज्ञानी धर्मोपदेशक उपस्थित थे और उन्होंने भाषण भी दिये थे। जिनमें से कितनेही अपनी जातिकी विद्वत्ता, वक्तृत्व कला और धर्म भक्ति के पण्डित थे। पर यह बात निर्भयता से कही जासक्ती है कि पौर्वात्य पंडितों में जैन समाज के युवक श्रावक ने अपने वर्गकी नीति और तत्व ज्ञान के सम्बन्ध में जो भाषण दिये थे उनमें जो रस था और वे जिस प्रेम से श्रोताओं ने सुने थे वे किसी दूसरे के नहीं सुने उनकी समता कोई भी भाषण नहीं करसक्के"

इसके प्रथम विदेशों में जैन धर्म का प्रचार करने के लिये कोई नहीं गया था विदेशियों को जैन धर्म का परिचय कराने के लिये सब से प्रथम सम्मान इसी श्रावक को प्राप्त हुवा।

बम्बई का व्याख्यान

सन् १८९५ के जून में ये बम्बई आए। बम्बई आने के पश्चात मि० गांधी ने जैनतत्व ज्ञान का अभ्यास विशेषरूप से आरम्भ किया। संसार के दूसरे धर्मों का निरीक्षण करके उनकी तुलना जैन धर्म से की। पश्चात् जैन धर्म के तत्वज्ञान की शिक्षा देने के लिये बम्बई में मि० गांधी ने "हेमचन्द्राचार्य अभ्यासवर्ग स्थापित किया। इस संस्था में कर्म सिद्धांत (Doctrine of Karmas) पुनर्जन्म, जड़ और चैतन्य सामान्य

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तत्व आदि विषयों पर मि० गांधी के उपयुक्त व्याख्यान हुये तब से मि० गांधी की विद्वता का परिचय जैनेत्तर विद्वान मण्डल में भी होगया और लोग जानने लगे कि जैन धर्म अज्ञात परन्तु उत्कृष्ट धर्म है। बम्बईकी बुद्धिवर्धकसभा, आर्यसमाज थियोसाफिकल सोसाइटी आदि संस्थाओं में भी मि० गांधी ने जैन धर्म पर व्याख्यान दिये ॥

अमेरिका से फिर आमन्त्रण

इधर इस प्रकार स्वदेश में देशबंधुओं को जैन धर्म का परिचय कराने का पवित्र कार्य चल रहाथा। उधर मि० गांधी को अमेरिकावालों की ओर से एक पर एक आमंत्रण आरहे थे कि वे अमेरिका जाकर वहां के निवासियों को जैन धर्म का विशेष परिचय करावें। स्वधर्म के परिचय कराने की तीव्र इच्छा रखते हुए, जैनों के तत्वज्ञान के प्रति रुचिको तृप्त करने का आमंत्रण कौनसा धर्माभिमानी पुरुष अस्वीकार करेगा? तुरन्त ही मि० वीरचन्द सन् १८९६ में पुनः दूसरीबार अमेरिका को गये। इस बार जाते समय २० अगस्त को मांगरोल जैन सांगीत मंडली की ओर से मान पत्र दिया गया था [इसका मूल (अंग्रेजी) और अनुवाद अन्यत्र प्रकाशित है]

इस समय अमेरिका में कुछ महीने रहकर और कुछ महीने इंगलेंड में रहकर अपने व्याख्यान दिये थे। साथही साथ बैरिस्टरी का अध्ययन भी करने लगे इस प्रकार धर्म प्रचार का उद्योग चल रहा था कि इनको फिर जैन बंधुओं ने हिन्दुस्तान बुलालिया। बुलाने का यह कारण था कि जैन समाज के हित के लिये (सेक्रेटरी आफ स्टेट भारत मन्त्री) के यहां एक अपील करनी थी। मि० गांधी की योजना सब को पसन्द आई।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इस लिये यह १२ वीं अगस्त सन् १८९८ को भारत वापस आगये। यहांपर तीन सप्ताह रहकर अपील के सम्बन्ध का पूरा परिचय प्राप्त करके २४ वी सितम्बर १८९८ को अपने पुत्र सहित फिर विलायत चले गये। आपने वहां सेक्रेटरी आफस्टेट के यहां ऐसी योग्यता से अपील की कि कार्य सिद्ध हो गया इस प्रकार इस कार्यमें भी यशस्वी होकर यह भारत लौट आए।

तीसरी बार जब यह अमेरिका गये थे तब मांगरोल जैन संगीत मंडली के उद्योग से स्वर्गीय न्यायमूर्ती महादेव गोविन्द रानाडे की अध्यक्षता में एक सार्वजनिक महासभा हुई। और मि० गांधी को मान पत्र दिया गया। इसकी अंग्रेजी नकल हिन्दी अनुवाद सहित आगे छपी है।

हमारे चरित नायक ने जैन धर्म सम्बन्धी तत्व ज्ञान विषयक जो भाषण सार्वधर्म परिषद में दिया था उस का उस परिषद् के उत्पादक और एकत्रित विद्वन्मण्डल पर ऐसा उत्कृष्ट प्रभाव पड़ा कि उन्होंने चरित नायक को एक रौप्य पदक प्रदान कर सम्मानित किया। इस सभा के भाषण को सब लोग जान जांय तथा जैन धर्म के तत्वों की उत्तमता को सबलोग समझ जायें इसलिये इन्होंने अमेरिका के प्रसिद्ध २ शहर वोस्टन न्यूयार्क, वाशिंगटन आदि शहरों में जैन धर्म पर व्याख्यान दिये। जैन धर्म का रहस्य, उसकी व्यापकता, और सुन्दरता श्रोताओं को समझाई। कासाडोग नामक शहर के सब निवासी इनके जैन धर्म सम्बन्धी भाषण से ऐसे संतुष्ट हुये कि उन्होंने मि० गांधी को एक स्वर्ण पदक समर्पण किया। ये भाषण जैन धर्म क्या है ? (what is Jainism) जैनियों का तत्व ज्ञान और मानस शास्त्र

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

Philosophy and Bychology of the Jains जैनियों का स्वार्थ त्यागका गूढ़ धर्म (The Occult law of sacrifice) जीवन के सत्य सिद्धांत (The true laws of life) और जैनियों का विश्वसे सम्बन्ध (Jains Relation to the Univrse) थे इनके सिवाय और भी अनेक भाषण अमेरिका में दिये थें। इस के पश्चात अमेरिकन लोगों को जैन तत्व ज्ञान का परिचय होता रहे. इस उद्देश्य से आपने वहां "गांधी फिलासफिकल सोसायटी नामक संस्था भी स्थापित करदी। इस प्रकार उद्दिष्ट कार्य में यश प्राप्त करके मि० गांधी ने इंगलेंड में प्रवेश किया

इंगलेंड के कार्य

लन्दन आदि प्रसिद्ध प्रसिद्ध नगरों के विद्वानों की मंडलियों में जैन धर्म के मूलभूत तत्वोंपर मि० गांधीने कितने ही भाषण दिये। इस समय बम्बई के भूत पूर्व गवर्नर लार्ड रे भी इङ्गलेंड में ही थे। मि० गांधी का पहिले से ही उनसे परिचय था। अतएव इन्हें अपने कार्यों में उक्त लार्ड साहब से भी बड़ी सहायता मिली। इङ्गलेण्ड में गांधी के कार्यों का यह परिणाम हुआ कि बहुत से जिज्ञासुओं ने जैन धर्म सीखने की प्रबल

नोट-इनके अंगरेजी व्याख्यानों की पुस्तकें मेघ जी हीर जी बुकसेलर पायधुनी, बम्बई; शेठ देवचन्द लाल भाई पुस्तकोद्धार फंड झवेरी बाजार, बम्बई अथवा जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, हीराबाग बम्बई से मिल सकती हैं। उन्हें पढ़कर लाभ उठाना चाहिये। पुस्तकों के नाम और कीमत इस प्रकार है :—

Jain Philosophy Rs. 1/8/-, Yog Philosophy as five और Kavma Philosophy -/5/-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इच्छा प्रगट की। उनमें से एक का नाम मि० वारन था। परधर्मी-ईसाई धर्मानुयायी जैन धर्म की शिक्षा लेने के लिये तैयार होगये, यह क्या मि० गांधी की कर्तृत्व शक्ति के लिये कम धन्यवाद की बात थी। आपने ऐसी शिक्षा देने की व्यवस्था की और एक शिक्षण वर्ग स्थापित कर दिया। इसका विजयी परिणाम निकलने के पहले ही शरीर की प्रकृति अनुकूल न रहने के कारण स्वदेश को लौटना पड़ा बम्बई आते ही बड़े सम्मान से आप को लोगों ने लिया।

स्वर्ग वास

स्वदेश के जैन समाजोन्नति के बिचारों ने मि० गांधी के हृदय में स्थान करलिया था और इस क्षेत्र में उन्होंने कार्य भी प्रारंभ कर दिया था परन्तु यदि मनुष्य की इच्छा सेही इस संसार में सब सूत्र चलते तो काल का महत्व ही कोई क्यों मानता और क्यों बड़े बड़े सार्व भौम, विद्वान और कवियों के लिये "कालाय तस्मै नमः" कहने का अवसर आता। काल के समीप सबकी गति कुंठित है; संसार में ऐसी कोई भी वस्तु नहीं है जो काल के वश में न हो फिर मि० गांधी की हकीकत ही क्या थी? अपने आरम्भ किये हुये व्यवसाय को छोड़कर एक दम स्वर्ग बास करना पड़ेगा, यह मि० गांधी को स्वप्न में भी ध्यान न था। विलायत से आए सप्ताहही हुए थे कि ७ अगस्त सन् १९०१ को मि० गांधी सब को शोक सागर में डुबा स्वर्ग को सिधार गये। कितनो ही का कथन है कि स्वदेश में मि० गांधी मरने के लिये ही आये थे। ठीक। जैन समाज का एक कर्तव्य शाली हीरा यों नष्ट हो गया। भारतीय जैन समाज के भूषण श्रीमान् वीरचन्द्र की आत्मा को सद्गति मिले

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उपसंहार

मि० गांधी में विशाल बुद्धिमत्ता होते भी वे बड़े मिलनसार थे, उनका स्वभाव बड़ा नम्रथा। उनकी वक्तृत्व शक्ति न्याय युक्तऔर बलवान थी। दिन रात काम करते रहने की उनकी पद्धति थी। अवकाश में भी वे विश्रांति नहीं लेते थे। अविश्रांति परिश्रम से कार्य करते रहने के कारण उनका स्वास्थ ठीक न रहता था और इस लिए उनकी अकालमृत्यु होगई, यदि यह कहा जाय तो अयुक्त न होगा। अपने धर्म की उन्नति के लिय संसार में मि० गांधी अल्प आयुही में चले गये परन्तु अन्य मनुष्यों के सम्मुख ज्वलंत दृष्टांत रख गये कि यह तुच्छ जीवन किस प्रकार अत्यन्त पूर्ण बनाया जा सकता है। पूर्वसमय में तीर्थंकर अथवा दूसरे मुनि भारत खंड के बाहर धर्मोपदेश किया करते थे परन्तु कितनी ही शताब्दियोंसे आर्यावर्त्त में ही जैनधर्म का नामावशेष रूपरहगया है। वर्तमान में उसको बाहर उज्ज्वल रूप में प्रकाशित करने का श्रेय मि० गांधी ने ही सम्पादन किया। मि० गांधी ने जो जो कार्य हाथ में लिये उन सब में उन्हें यश प्राप्त हुआ। श्रीयुत स्वर्गस्थ मि वीरचन्द भाई की मृत्यु से जैन समाज की वड़ी हानि हुई ऐसा बीर पुरुष आज न तो दिगम्बर अथवा श्वेताम्बरों में कोई है और न भविष्य में होने की आशा है।

(२)

श्रीमान् गांधी जी जब दूसरी बार सकुटुम्ब अमेरिका को गये, तब मांगरोल सांगीत मंडली की ओर से अंगरेजी और गुजराती भाषा में कर्मवीर स्वर्गीय सेठ प्रेमचन्द रायचन्द के सभापतित्व में जो मान पत्र उन को दिया गया था। उसकी नकल पाठकों के अवलोकनार्थ नीचे देते हैं।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

To

VIR CHAND RAGHAVJI GANDHI, ESQR., B.A.,
Member of the Royal Asiatic Society,
Secretary to the Jain Association of India,
President of the Hemchandra Charya,
Study Class, &c., &c.,
Bombay.

DEAR SIR,

We, the Members of the Mangrol Jain Sangit Mandli, are assembled here to day to give expression in public to the high esteem and ardent admiration with which we all regard you for the incalculable benifits you have conferred upon our assembly by useful services and timely suggestions, as well as on the whole community, on religious matters, and many important and intricate questions connected with the affairs of our sacred Places.

We avail ourselves of this occasion, especially because only to-morrow you will be on your way to that land where you went in 1893, as an accredited *Delegate* of the Jain Community, to represent the views on the Ethics and Philosophy of our Religion in the Parliament of Religions at Chicago. It was a matter of joy and satisfaction for us all that out of a few Indian Delegates of light and learning, who could compete with and hold their own against the foremost thinkers of Europe and America, you were the only person who was heard with rapt attention and accorded due praise.

Your real work may be said to have commenced with the termination of the sittings of that grand Assembly, for it was then that invitations from persons of diverse sview and various positions, coupled with the earnest solicitations of Associations, Unions, and Clubs, began to pour in, which induced you to prolong

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

your stay there. This brief sojourn you turned to the best account, by delivering many public lectures on the idea and aim of Jain Philosophy-nay-when on certain occasions the duty of representing the whole India devolved upon you, you discoursed on Indian Philosophy in general, and succeeded to a great extent in dispelling doubts and misconceptions about the History, Morality, and Religion of the Hindus, and thus lifted up the veil which screened real things from their gaze. Here, also, after your arrival you did not fail to embrace every opportunity to enlighten us on the manners, customs and the educational systems of America, and your unremitted exertions have resulted in creating a zealous study of our Religion and Philosophy and the formation of the Hemchandra charya study class.

Rejoicing as we do at your second visit, we cannot but feel profound sorrow at the idea of seperation from a person of your knowledge, ability, and simplicity, we however console ourselves with the fact that what is loss to us is a substential gain to our American Bretheren.

Those of our Bretheren on the other side of the Mississipi who being far removed from the centres of activity, could not share the pleasures of your company and adresses, will have now ample time to satisfy themselves. It will also be a boon and blessing to the enthusiastic students of occult Philosophy, who paid you a well merited men of honour by founding a society of Philosophic Investigations in your name. We feel pride and pleasure to know that you will be accompanied by your devoted wife, who will be a source of great help and comfort to you, and will afford our American sisters, a good opportunity to form a correct idea of the nature, virtues and responsibilities of an Aryan Lady.

In conclusion, Sir, we heartily wish you a lion voyage and pray that blessings may be strewn accross your path, and that your efforts in propounding and propagating the high principles of our noble religion may

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

be crowned with success, and hope that the revival of the glorious Past of the noble land of the East, which was hailed with favour in a dim and prophetic vision, by that illustrious French writer Victor Hiugo is destined to take place in the sail of America, which have been already brought into contact by material civilization, will through our spritual thoughts be united in more endûring and permanent bonds of Fraternity.

As for ourselves, we shall be longingly looking forward for that day, when after mastering the great problem of the free education of the masses, you will return here and work for its introduction, for it is upon the solution of this problem alone that the future happiness of our country depends.

We beg to remain,
Dear Sir,
Your Friends and well wishers,
Prem Chand Roy Chand,
President of the meeting,
Moti Chand Debi Chand,
President,
for members of the Mangrol
Jain Sangit Mandli.

Bomboay,
20th August 1896.
Amer Chand
Tilok Chand
Honourary Secretary.

ऊपर के मानपत्र का हिन्दी अनुवाद

मि० वीरचन्द राघवजी गांधी बी० ए०
मेम्बर आफदी रायल एशाटिक सोसाइटी,
सेक्रेटरी जैन एसोसिएशन आफ इण्डिया आदि बम्बई

प्रियबन्धु,

श्रीमांगरोल जैन सांगीत मंडली के हम सब सभासद आज आपकी उपयुक्त सेवा, प्रासंगिक सूचनाओं तथा समस्त

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

समाज धर्म संबन्धी विषयों में, पवित्र तीर्थों से सम्बन्ध रखने वाले कठिन और महत्व के प्रश्नों के विषय में जो आपने असंख्य लाभ पहुंचाये है, उसके लिये हम प्रत्यक्ष रूप से आपका आभार मानते हैं। आपके प्रति उच्चमान तथा प्रेम प्रदर्शित करने के लिये हम सब यहां एकत्रित हुये हैं।

इस प्रसंग को जल्दी लाने का मुख्य कारण यह है कि कलही आप उस देश (अमेरिका) को प्रस्थान करजाओगे जहां आप सन् १८९३ ई० में चिकागो की धर्म परिषद में हमारे धर्म के तत्वों और रहस्य को प्रदर्शित करने के लिये जैनों के प्रतिनिधि बनकर गयेथे। यूरुप और अमेरिका के श्रेष्ठ तत्व ज्ञानियों और अच्छे विद्वानों की समता करने हिन्दुस्तान के अच्छे विद्वान गये थे। पर हमें यह जान कर बड़ा हर्ष और संतोष हुआ कि आपके व्याख्यान बड़े ध्यान से सुने गये और आप के व्याख्यानों को प्रशंसा कीगई॥

उस महा समाज की बैठक पूरी होतेही आपके वास्तविक कार्यों का आरम्भ हुवा क्योंकि तभी से भिन्न भिन्न विचार वाले और भिन्न भिन्न स्थिति के मनुष्यों ने आपको आमन्त्रणों से और अनेक मंडलियों, सभाओं और क्लबों की प्रार्थनाओं से प्रेरित होने पर आपको वहां कुछ समय के लिये ठहरना पड़ा। विविध विषयों पर व्याख्यान और भाषण देकरही आपने इस समय का सदुपयोग किया। यही नहीं, किन्तु भारतवर्ष के प्रतिनिधि होने के कर्तव्य को भी निबाहा। क्यों कि सारे भारतवर्ष के प्रतिनिधि के कर्तव्य का भार आप के सिर पर था। अतएव आपने भारतीय तत्वज्ञान के विषय में भी अपने विचार प्रगट किये थे। वहां के निवासियों के दिमाग में

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भारतीय इतिहास, नीति और धर्म के प्रति जो जो भूलें घर कर रही थीं उन्हें दूर करने में आपने बड़ी सफलता प्राप्तकी और उन्हें उनके विषय में सत्य बातें बतलाकर उनका भ्रम दूर किया। यहां आने पर आपने अमेरिका के उपयोगी रीति रिवाज और विद्या प्रचार के बहु मूल्य संदेश हमें सुनाये। धर्म की ओर रुचि उत्पन्न करनेका आपका यह बड़ा प्रयत्न भी सफल हुवा और हेमचन्द्राचार्य अभ्यास वर्गकी स्थापना हुई

आपकी दूसरी मुसाफिरी के समय हम खुशी मना रहे हैं पर साथही आप जैसे ज्ञानवान, शक्तिवान, और नम्र गृहस्थ के वियोग का हमें बड़ा दुख है। पर आप के वियोग से हमारी जो भारी हानि होगी उसके बदले हमारे अमेरिकन भाई और बहिनों को अमूल्य लाभ होगा यही विचार कर हमें खुशी होती है।

मिसिसिपि नदी की दूसरी ओर बसने वाले अमेरिकन भाइयों ने आपके व्याख्यानों से लाभ प्राप्त कर नहीं पाया था इसलिये अब वह अपनी इच्छा को पूर्ण करसकेंगे। तत्व ज्ञान के जिज्ञासु विद्वानों के लिये भी जिन्होंने आपके गुणों और ज्ञान पर मुग्ध होकर आपके नाम से तत्व शोधक मंडल स्थापित किया है आपकी यह यात्रा बड़े हर्ष और आशीर्वाद का कारण होगी। हमें यह जानकर और भी हर्ष हुवा कि इस यात्रा में आप के साथ आपकी सह धर्मिणी भी रहेगी, जिनसे आपको पूरी सहायता और आराम मिलेगा; साथही वे अमेरिकन बहिनों को आर्य महिलाओं के कर्तव्य, गुण और स्वभाव का ज्ञान करावेंगी।

अन्त में हम अन्तः करण से इच्छा करते हैं कि आप की

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यात्रा आनन्द से समाप्त हो । जहां जहां आप जायें वहां वहां आशीर्बचनों की बृष्टि हो, हमारे धर्म के महान सिद्धान्तों के समझाने में और प्रसार करने में आपको सफलता हो, यही हम प्रार्थना करते हैं । पूर्वीय देशकी दिव्य भूमि की भूत पूर्व उज्वल स्थितिके पुनरुद्धार यशस्वी फ्रेंच लेखक मि० ह्युगोये को आशा थी । कि वह पुनरुद्धार अमेरिका में जाकर हुआ । भारत और अमेरिका का भौतिक सुधारों से जो थोड़ासा परस्पर संबन्ध हुवा है उसके द्वारा हमारे अध्यात्म ज्ञान के और प्रसार की तथा स्थायी भ्रातृभाव की आशा है ।

हम उस दिनकी प्रतीक्षा बड़ी उत्सुकतासे कर रहे हैं जिस दिन आप जन समाज की अनिवार्य और निःशुक्ल शिक्षा के महान सिद्धांत में निपुणता प्राप्त करके यहां वापिस लौटेंगे और उसके प्रचार के लिये आप कार्य करेंगे । इसी प्रश्न पर हमारे देश का भविष्य सुख निर्भर है ।

भवदीय

बम्बई	प्रेमचन्द रायचन्द
ता० २० अगस्त १८९६	मीटिंग के प्रेसीडेंट
अमरचन्द तिलकचन्द	मोतीचन्द देवचन्द प्रेसीडेंट
आनरेरी सेक्रेटरी	श्रीमांगरोल जैनसंगीतमंडली

To.

Vir Chand Raghavji Gandhi Esqr. B.A.M.R.A.S.,

Dear Brother,

We, your friends and admirers, have assembled here to day to give expressions to our sentiments of deep gratitude andh igh admiration, which we so sincerely

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

cherish for you, in due appreciation of the invaluable and innumerable services which you have so creditably rendered to the members of your community and to the people of India in general, by fostering brotherly feelings in the hearts of the kind and courteous Americans, for the people of our renowned India.

We feel much satisfaction and pride repeat that we find in you, only a representative of the Jain Religion at the Parliament of Religions, held at Chicago, but at the same time we find in you a most energetic and competent advocate of the cause of Indian Philosophy. Disregarding the unavoidable inconveniences, which present themselves to an Orthodox Hindu traveller scrupulously following the prescriptions of religion, while prosecuting noble work, which you have so cheerfully undertaken, you visited different parts of America and preached in lofty tones from public and private pulpits the religion and Philosophical tenets of Hinduism; and we are extremely glad to endorse the opinion of the American public and press, that you have succeeded all with all the moral triumph of a conscientious preacher, in awakening American interest and sympathies for the religion and philosophy of India which has been gloriously hailed by the foreigners from times immemorial, as the mother of Religions and the Cradle of Civilization. This, in itself is a sign, prophesying good for the orient and the Occident.

But your mission did not end here, you next concentrated all your energies in a pitched battle against the grant of darkness assuming various forms and specially against lock of education among the women of this country, which is one of the saddest and most deplorable condition of Indian society, we are much pleased to hear, has sent three of our Hindu sisters to America, with the offer to maintain and educate them, for three years at the expense of the society, so that they may be enabled to practically study how to become proper

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

help-mates to their husbands and pioneers in the work of reforming our society. We respectully solicit your favour to convey to our best sympathies and choisest blessings in their noble mission of patronizing female education in India.

Equally precious are your services, during the recent famine in India, when you got enlisted with your characteristic promptness, the sympathy of the kind herated Americans for the poorer masses, who were starving to death for want of sufficient food and sent a ship to India, laden with American maize for free distribution among the famine stricken people. These services and these touches of your philanthrophic disposition, we assuse you, our dear brother, have rightly earned for you our lasting admiration and gratitde.

The cause of Vegetarianism is equally commanding our admiration your numerous addresses so vividly portraying the excruciating pains and heart-rendering agonies of the poor animals, writhing under the knives of the heartless butchers, have reclaimed many flesh eaters to the pure hindu vegetarian diet and have taught them to respect the feelings even of the lower creation an object lesson of spiritual life which India has still to preach and to teach most of the civilized nations of the world.

Your strong protest against the misrepresentations by the American missionaries of the Indian life and morals, your valuable advice, for the introduction of the American system of practical education in Indian schools, your genuine desire to see our Indian students in England paying particular attention to English Arts and manufacteres with the object of improving and promoting Indian Industries, your contributions to the Indian press for drawing the attention of our educated youths to commercial fields that are open for them in Enland and America, these are some of the meltifarious subjects that have held us in unspeakable wonder,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

and speak volumes for your sound Judgment and comprehensive abilities.

This large and influential gathering rejoices to see that you are the first Hindu among the whole Hindu community of India, to take your wife to America and to give practical illustration of the life of an Indian Hindu woman to our sisters of the Western Hemispere A short stay of nearly two years of your son Master Mohan in America, and his training in an American educational institution, give us every hope that he will be a second Gandhi after you to pickup, with the greatest zeal and interest, the work which you have commenced so successfully of implanting "India in America."

In conclusion, we wish you a hearty *bon Voyage* to England and America and a happy return to our dear country after fulfilling your noble mission of preaching Oriental Philosophy.

On behalf of the Friends and admirers assembled in a public meeting held at Novelty Theatre.

Bombay, President,

Dated 23rd Sept., 1889. M. G. RANADE.

मि० वीरचन्द राघव जी गांधी

बी० ए०, एम० आर० ए० एस०

प्रिय बंधु,

जग प्रसिद्ध आर्य भूमि के लोगों के प्रति दयालु और विनयवान अमेरिकन लोगों के हृदयों में भ्रातृभाव का जन्म दे कर आपने अपनी जाति भाइयोंही की नहीं बल्कि सारे भारतवर्ष की जो अमूल्य सेवा की है उसके आभार मानने के लिए तथा प्रेम दर्शाने के लिये हम सब यहां पर एकत्रित हुये हैं।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चिकागो की धर्म परिषद् में जैन प्रतिनिधि की भांतिही नहीं, परन्तु भारतीय अध्यात्म विद्या के पक्के पोषक की भांति आपने कार्य किया, हमें यह कहते हुये संतोष तथा अभिमान होता है। हिन्दू धर्म की रीति रिवाजों के अनुसार समुद्र यात्रा का निषेध है। उसपर भी कठिनाइयोंकी परवा न करके आपने अमेरिका की यात्रा की। वहां जाकर अमेरिका के भिन्न २ भागों में प्रवास किया और अमेरिकन लोगों को आर्य धर्म तथा तत्वज्ञान के बहुमूल्य उपदेशों का बोध कराया। अमेरिकन लोगों ने आपके मत का अनुमोदन किया यह जानकर हम बड़े आनन्दित हैं। अमेरिकन लोगों का हिंदू धर्म तथा तत्त्व ज्ञान के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न करने में आपने अच्छी सफलता प्राप्त की है॥

उसके पश्चात् भारतवर्ष की स्त्रियों की अज्ञानावस्था की ओर अमेरिकन बहनों का ध्यान आकर्षित किया और भारतीय स्त्रियों की विद्या बृद्धि के लिये आपने अमेरिकन स्त्रियों की एक मंडली स्थापित की। उस मंडली की ओर से तीन भारतीय विदुषियों को वहां रहने और शिक्षा लाभ करने के लिये आमंत्रण मिला। तीन साल तक उस मंडल के व्यय सेही वे विदुषियें वहां रहीं और शिक्षा प्राप्त की। उस दयालु आमंत्रण के लिये भारतीय स्त्रियें अमेरिकन बहनों का बड़ा आभार मानती हैं, यह आप उन्हें सूचित करदें।

आप के काम यहांही समाप्त नहीं होते। इसके पश्चात् जब भारत में दुष्काल पड़ा तब आप ने इस ओर भी अमेरिकन लोगों का ध्यान आकर्षित किया और अन्न का एक स्टीमर भिजवाया। आप की यह सेवायें और यह देश प्रेम प्रशंसनीय

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हैं। इसी कारण, प्यारे बंधु, हमारे हृदयों में आपके प्रति मान और आभार ने स्थायी स्थान प्राप्त कर लिया है।

मांसाहारियों को आपने बनस्पति भोजन के लाभ बता कर हिन्दुभोजन की ओर प्रवृत्ति की, उसके लिये भी हम आप का आभार मानते हैं। साथही बड़ी उत्तमता से आपने "अहिंसा परमोधर्मः" के महान तत्व का प्रचार किया। भारत की रीति और नीति के विषय में अमेरिकन मिसिनरियों द्वारा फैलाई हुई घृणित किम्बदन्तियों का आपने खंडन किया, भारत में अमेरिका की शिक्षा पद्धति की योजना का यत्न किया, इंगलेंड को पढ़ने जाने वाले हिन्दुभ्राताओं को आपने सिखाया कि वे अपने देश में अंगरेजी आविष्कारों का हुनरोंका प्रचार कर के भारतीय उद्योग धंधों की उन्नति करने का यत्न करें, पत्रों में आपने लेखों द्वारा आन्दोलन करके हमारे युवाओं और विद्वानों का ध्यान इंगलेंड और अमेरिका के उद्योग धंधे सीख कर और इस देश में प्रचार करने के लिये उनका ध्यान आकर्षित किया। इस प्रकार भारत को जो बहुमूल्य सेवा आपने की है, उसके लिये हम अपने शुद्ध अन्तःकरण से आभार मानते हैं।

यह एकत्रित समूह इस बात को सोच कर बड़ा आनन्दित होता है कि आपही भारतीय हिन्दु समाज के प्रथम हिन्दू हैं जिसने अपनी स्त्रीसहित यात्रा की और पश्चिमीय संसार को भारतीय हिन्दु स्त्री के जीवन का उदाहरण बताया आप के पुत्र मास्टर मोहन जी दो वर्ष अमेरिका ठहरे और वहां के विद्यालय में शिक्षा पाई, हमें आशा दिलाते हैं कि आपके पश्चात दूसरे गांधी चुनने का वे अवसर देंगे। आपके शुभ कार्य बड़ी

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

खुशी तथा सफलता से पूर्ण होंगे क्योंकि आप हिन्दु धर्म के कुशल प्रतिनिधि हैं।

अन्त में हम चाहते हैं कि आप की यात्रा सफल हो और और आप के कार्यों में विजयहो। अमेरिका में आर्य धर्म का पुष्ट वृत्त बोकर आनंद सहित भारत को वापिस लौटो।

भवदीय मित्र और कार्यों के अनुमोदकः-

बम्बई
ता० २३ सितम्बर१८८६

सभापति
महादेव गोविन्द रानाडे।

इसके पश्चात् सभापति आनरेबल मिस्टर रानाडे ने खड़े होकर कहना प्रारम्भ किया। उनके खड़े होने पर सभा में तालियां बजीं। आपने कहा कि मिस्टर गांधी ने हिन्दुस्तानकी सेवा अमेरिका में की है, उसके लिये वे धन्यवाद के पात्र हैं। अपने हिन्दूधर्म को इंगलैंड और अमेरिका में फैलाने के लिये मि० गांधी एक आदर्श (Model) हैं मि० गांधी ने जो परिश्रम किया है उसका फल वे अथवा हमको प्राप्त नहीं होगा। इस परिश्रम के उत्तम फल का लाभ हिन्दू धर्मको प्रसार होने पर आगे की संतान उठायेगी। मि० गांधी जैसे उत्साही युवा गृहस्थ जैन जाति में हैं इससे जैन जाति का गौरव और भी बढ़ गया है। मि० गांधी की और उनके अनुकरण करनेवाले दूसरे गृहस्थों की मैं विजय कामना करता हूं। उन्हों ने हमारे लिये जो परिश्रम किया है उसके लिये मैं उनका उपकार मानता हूं॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नं० ३

स्वामी विवेकानन्द और वीरचन्दकी तुलना

महात्मा विवेकानन्द आर्य तत्व ज्ञान की वेदान्त फिलासफी समझाने के लिये चिकागो की धर्म परिषद में गये वे ४० वर्ष की अवस्था मेंही सन १६०२ में मृत्यु को प्राप्त हुये उस समय अमेरिका के प्रसिद्ध पत्र "बैनर आफ लाइट" ने तुलना करते हुये लिखा था।

जैन तत्व ज्ञानी बीरचन्द की लेखन शक्ति एवम् वक्तृत्व शक्ति में जो विचारों की नूतनता थी वह विवेकानन्द में न थी

स्वामी विवेकानन्द मांसाहारी थे पर वीरचन्द धार्मिक जैन की भांति जीवन व्यतीत करनेवाले निर्दोष वनस्पत्याहारीथे

भारत के दोनो उत्तम रत्नों के लिये नीचे लिखी बातें कही जासकती हैं।

(१) विविध धर्मों की चरचा करने के लिये सन १८६३ में भरने वाली चिकागो की धर्म परिषद में गये और प्रशंसा प्राप्त की।

(२) दोनों लोक प्रिय व्याख्यान कार थे। अमेरिका के श्रोताओं की ओर से उनके सम्बन्ध में स्तुति वचन सुनाई पड़ते हैं।

(३) जिन लोगों ने इनके भाषणों को सुना उन उन ने उनके सिद्धांतों को प्रीति पूर्वक स्वीकार किया और जिन्होंने उनके सिद्धांतों का यथार्थ निर्णय करने के लिये विचार किया उनके मन के ऊपर इनके विचारों की छाप अद्यापि पर्यन्तरहीहै

(४) दोनों ने थोडी उम्र पाई विवेकानन्द ४० वर्ष की आयु में और वीरचन्द ३७ वर्ष की आयु में स्वर्गस्थ हुये।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यदि अधिक समय तक जीते रहते तो हमारा भविष्य कुछ और सुधर जाता ॥

(५) दोनों ने पवित्र भारत भूमि मेंही आकर प्राण त्याग किये। विवेका नन्द ने सन् १९०२ में वेलूर मठमें और वीर चन्द ने सन् १९०१ में बम्बई में।

(६) स्वामी विवेकानन्द के प्रबल विचारों के लिये उनके शिष्य मंडल (अभेदानन्द आदि) ने राम कृष्ण सोसाइटी आदि अनेक संस्थायें स्थापित कीं। परन्तु शोक कि वीरचन्द के प्रबल विचारों के असर से कोई जैन संस्था स्थापित न रहसकी, यह बात नहीं है बल्कि वीरचन्द के स्मरणार्थ कोई संस्था स्थापित करने का प्रयत्नही नहीं किया गया ॥

श्रीमद्वीरचन्द प्रत्येक सज्जन के हृदय में अभीतक स्थित हैं उनका शरीर नष्ट होगया परन्तु वे नष्ट नहीं हुये हैं। उनका यश रूपी शरीर अमृत और अमर है। अंग्रेजी कहावत है To live in hearts we leave behind, is not death)अर्थात हृदय में रहना मृत्यु नहीं है। तीर्थादि कार्यों में विजय प्राप्त करने में, जैन धर्म के प्रसार करने में, जड़वादियों के हृदयों पर जैन संस्कारों की छाप डालने में श्रीवीरचन्द ने अपने मन वचन और शरीर से जो आत्म त्याग किया है, उसके लिये सारा जैन समाज उनका ऋणी है। इस ऋण से स्वर्गस्थ होने के हित के लिये नहीं बल्कि अपनी कृतज्ञता प्रदर्शित करने के लिये भी जैन समाज ने अपना कर्तव्य किस प्रकार पूरा किया। इसका विचार आतेही समाज की स्थिति और उसके अधः पतन का दृश्य नाचने लगता है।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

We shall do so much in the years to come.
But what have we done today?
We shall give our gold in a princely sum.
But what did we give today?
We shall life the heart and dry the tear.
We shall plant a hope in the place of fear.
We shall speak with the words of love and cheer.
But what have we done today?

Nixon water man.

विशेष क्या लिखें। अपनाही अवगुण विशेष क्या प्रकाशित करें। श्रीमद्वीरचन्द्र के जीवन और कार्यों के बोध का स्मरण हमारी कृति में रहे यही बस है। अंग्रेजी कविने कहा है

Think truly and thy thoughts shall the world's famine feed;
Speak truly and each word of thine shall be a fruitful seed;
Live truly and thy life shall be.
A great and noble creed.

Bonar.

सद्विचार करो, वे संसार के विचारों के दुष्कालों की पूर पाड़ेंगे; सत्य बचन बोलो, जिससे तुम्हारे प्रत्येक शब्द रूपी बीज से कल्पद्रुम प्राप्त होंगे, शुद्ध जीवन व्यतीत करो तब तुम्हारा जीवन महान् उच्च धर्म संस्था बनेगी। जिसका अनुसरण अनेक मनुष्य करेंगे।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नियमावली

श्री आत्मानन्द जैन ट्रैक्ट सोसायटी अम्बाला शहर

१—इस का मेम्बर हरएक होसकता है।

२—इसका चन्दा कम से कम १) वार्षिक है। अधिक देने का हरएक को अधिकार है। जो महाशय एक साथ ५०) रु० इस ट्रैक्टसोसायटी को देंगे वह इस के लाइफ मेम्बर समझे जावेंगे। उनसे वार्षिक चन्दा कुछनहीं लिया जावेगा

३—इस सोसायटी का वर्ष १ जनवरी से प्रारंभ होता है। जो महाशय मेंबर होंगे वे चाहे किसी महीने में मेंबर हों किन्तु चन्दा उनसे ता० १ जनवरी से ३१ दिसम्बर तक का लिया जावेगा।

४—जो महाशय अपने खर्च से कोई ट्रैक्ट इस सोसायटी द्वारा प्रकाशित कराकर बिना मूल्य वितीर्ण करना चाहें, उनका नाम ट्रैक्ट पर छपवाया जायगा।

५—जो ट्रैक्ट यह सोसायटी छपवाया करेगी वे हरएक मेम्बर के पास विना मूल्य भेजे जाया करेंगे॥

निवेदकः—

सेक्रेटरी

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

gyanmandir@kobatirth.org
022290
Serving JinShasan

For Private and Personal Use Only